प्रैक्टिस सेट-1

1. आदर्शवाद का आधारभूत सिद्धान्त निम्नांकित नहीं है-
   (a) आध्यात्मिक मूल्य
   (b) व्यक्तित्व का विकास
   (c) विभिन्नता में एकता
   (d) प्रकृति में व्यक्ति ही सत्य है।
2. ''मस्तिष्क या आत्मा ही सम्पूर्ण जगत का मूल तत्त्व है तथा चिन्तन सत्ता मानसिक है।'' -रॉस यह कथन किस दार्शनिक विचारधारा को व्यक्त करता है?
   (a) अस्तित्ववाद (b) आदर्शवाद
   (c) मार्क्सवाद (d) यथार्थवाद
3. जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए क्या आवश्यक है?
   (a) बहुत धनवान होना।
   (b) किसी प्रकार का प्रशिक्षण।
   (c) सही समय पर निर्णय।
   (d) अपनी सीमाओं एवं असफलताओं को स्वीकार करके अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करना।
4. अवकाश प्राप्ति के बाद कौन लोग सुखी होते हैं?
   (a) जिनके पास धन होता है।
   (b) जो स्वस्थ होते हैं व सक्रिय रहते हैं।
   (c) जो समय के साथ बदलते रहते हैं।
   (d) उपर्युक्त सभी।
5. आज के तनावपूर्ण जीवन में सहज रहने के लिए क्या आवश्यक है?
   (a) अवकाश का समय निकालकर कोई भी इंडोर या आउटडोर खेल अपनी आवश्यकता के अनुरूप खेलें।
   (b) अपनी रुचि का साहित्य पढ़ें।
   (c) मन बहलाव के लिए रोज के अपने काम से हटकर दूसरा कोई काम करें।
   (d) उपर्युक्त में से कुछ भी।
6. आप एक उच्च अधिकारी हैं और विवाहित भी। आपके छोटे भाई-बहिन हैं जो पढ़ रहे हैं और पिताजी की आय (Income) आपसे कम हैं। आप क्या करेंगे?
   (a) अपने परिवार व बच्चों के सुखद जीवन में व्यस्त रहेंगे।
   (b) अपने भाई-बहनों की पढ़ाई का व्यय स्वयं वहन करेंगे।
   (c) बड़े बेटे के रूप में अपने माता-पिता की हर सम्भव सहायता करेंगे।
   (d) पिताजी को अपनी व्यस्तता बतांएगे व उन्हें आश्वासन देंगे कि आवश्यकता पड़ने पर आप उनकी सहायता करते रहेंगे।
7. मनोविज्ञान का ज्ञान होना क्यों आवश्यक हैं?
   (a) विभिन्न परिस्थितियों से मानव व्यवहार को समझने के लिए
   (b) जीवन की विभिन्न समस्याओं के निवारण के लिए
   (c) मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के लिए
   (d) उपर्युक्त सभी।
8. किसी व्यक्ति की व्यावसायिक परिपक्वता व सफलता किस पर निर्भर करती है?
   (a) घर का शिक्षित वातावरण
   (b) व्यक्ति की अपनी क्षमता, बुद्धि एवं रुचि
   (c) अपनी प्राथमिकताओं का अपनी क्षमताओं एवं सीमाओं के अनुसार निश्चय करना
   (d) भविष्य के व्यवसाय के लिए पहले से व्यवस्थित व नियोजित रूप में सोचना।
9. निम्नलिखित में से किन शारीरिक लक्षणों पर आनुवंशिकता का प्रभाव पड़ता है?
   (a) रंग (b) रूप
   (c) कद (d) उपरोक्त सभी
10. आनुवंशिकता हमें विकसित करने के लिये क्षमतायें देती है परन्तु इन क्षमताओं के विकास करने को अवसर पर्यावरण से ही मिलना चाहिये। यह कथन निम्नलिखित में से किसका है?
    (a) आर. डेविस (b) लैण्डिस और लैण्डिस
    (c) लम्ले (d) मैकाइवर तथा पेज
11. नीग्रो और श्वेत प्रजातियों के तुलनात्मक अध्ययन में बुद्धि परीक्षणों द्वारा आनुवंशिकता के पक्षपात के विरुद्ध कौन-से तर्क दिये गए?

(a) बुद्धि परीक्षण ज्ञान का परीक्षण है और ज्ञान पर्यावरण पर निर्भर है
(b) बुद्धि परीक्षण बुद्धि वाहकाणु का परीक्षण नहीं है
(c) नीग्रो लोगों को उन्नति के अवसर कम मिलते हैं
(d) उपरोक्त सभी

12. निम्नलिखित में से किन वैज्ञानिकों ने कद की लम्बाई पर पर्यावरण का प्रभाव दिखलाया है?
(a) स्कीनफैल्ड (b) बॉस
(c) दोनों (d) कुमारी बर्क्स

13. मानव बुद्धि के विकास पर 80% प्रभाव आनुवंशिकता का और 20% पर्यावरण का पड़ता है। यह निम्नलिखित में से किसका विचार है?
(a) हटिंगटन (b) वाटसन
(c) आर. डेविस (d) कुमारी बर्क्स

14. आनुवंशिकता के प्रभाव के विरुद्ध निम्नलिखित में से कौन-से तर्क दिये गये हैं?
(a) आनुवंशिकता का प्रभाव सीमित है
(b) बुद्धि पर पर्यावरण का प्रभाव
(c) शारीरिक लक्षणों पर पर्यावरण का प्रभाव
(d) उपरोक्त सभी

15. निम्नलिखित में से किसने धार्मिक शिक्षा का समर्थन किया था?
(a) हन्टर आयोग 1892
(b) भारतीय विश्वविद्यालय आयोग 1902
(c) कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग 1919
(d) राधाकृष्णन आयोग 1948

16. ''भारत जैसे बहुधर्मी देश में इस बात की नितान्त आवश्यकता है कि यहाँ सभी धर्मो का सहिष्णुता के साथ अध्ययन बनाया जाये।'' यह सिफारिश किसकी है?
(a) कोठारी आयोग (b) प्रकाश समिति
(c) डॉ. राधाकृष्णन विश्वविद्यालय आयोग
(d) सैडलर कमीशन

17. आपके विचार में 1958 की श्री प्रकाश समिति द्वारा धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में निम्नलिखित सिफारिशों में सबसे महत्वपूर्ण सिफारिश कौन-सी है?
(a) शिक्षा संस्थाओं में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास आवश्यक है
(b) प्रत्येक विद्यालय और घर में धार्मिक और नैतिक साहित्य उपलब्ध होना चाहिये
(c) प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक धार्मिक और नैतिक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकें तैयार कराई जानी चाहिये
(d) धार्मिक और नैतिक शिक्षा में रूढ़िवादिता को प्रोत्साहन नहीं दिया जाना चाहिये

18. ''अस्तु, विद्यालय को सम्पूर्ण बालक से सरोकार रखना चाहिये और कोई भी बालक धर्म के प्रशिक्षण के बिना सम्पूर्ण नहीं बन सकता।'' ये शब्द किसके हैं?
(a) पी. टी. मेयर (b) डॉ. एस. राधाकृष्णन
(c) महात्मा गाँधी (d) स्वामी दयानन्द

19. ''धर्म शिक्षा का अन्तिम आधार है।'' किसने कहा है?
(a) विवेकानन्द (b) महात्मा गाँधी
(c) रविन्द्रनाथ ठाकुर (d) श्री अरिवन्द

20. आत्मसात्करण शब्द को किस प्रकार परिभाषित किया गया है?
(a) कुछ अन्य लक्ष्य या प्रणाली का एक सामान्य प्रक्रिया के अन्तर्गत उनकी सहस्थिति का संदर्भ देकर
(b) प्रमाणित मूल्यों के अनुकूलन के संदर्भ में गुणात्मक रूप से
(c) समूहों के आकार तथा उनके प्रतिमानों के संदर्भ में गुणात्मक रूप से
(d) संरचनात्मक या प्रकार्यात्मक विभेदीकरण के संदर्भ में गुणात्मक रूप से

21. उस प्रक्रिया को किस नाम से पुकारते हैं जिसमें एक नृजातीय समूह अपनी विशिष्ट विशेषताओं को समाप्त कर अन्य सामाजिक खण्ड से अभेद्य हो जाता है?
(a) आत्मसात्करण (b) प्रसार
(c) बहुसांस्कृतिवाद (d) बहुलवाद

22. परसंस्कृतिग्रहण की कौन-सी व्याख्या उपर्युक्त हैं?
(a) दो संस्कृतियों के सम्पर्क में आने के परिणामस्वरूप एक-दूसरी से प्रभावित होती है
(b) सभ्यता के प्रमुख केन्द्रों से सांस्कृतिक विषयों तथा विशेषताओं का छोटे क्षेत्रों में प्रसार होता है।
(c) संस्थाएँ तथा सांस्कृतिक प्रतिमान जो सार्वभौमिक रूप से सभी मानव समाजों में पाए जाते हैं
(d) एक व्यक्ति जो दूसरे समूहों के सांस्कृतिक तत्वों के आत्मसात करता है

23. क्रियात्मक शोध प्रजातंत्र युग की देन है। यह प्रत्यय सामाजिक मनोविज्ञान की उपज है। किस मनोवैज्ञानिक ने अपने क्षेत्र सिद्धान्त में क्रियात्मक शोध का संकेत किया है?
(a) कुर्ट लिविन (b) हल
(c) थार्नडाइक (d) स्किनर

24. थार्नडाइक के सीखने का सिद्धान्त तथा कोहलर का समग्राकृतिक सिद्धान्त निम्न में से किस शोध से जुड़ा हुआ माना गया है?
(a) मौलिक अनुसंधान (b) क्रिया शोध
(c) सर्वे शोध (d) एपलाईड शोध

निर्देश (प्रश्न 25-27) : नीचे दिए गए अवतरण को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें।

शोध की समस्या को अन्तिम रूप से अध्ययन का विषय बनाने से पूर्व अनुसन्धानकर्त्ता उसकी उपयुक्तता के बारे में निजी, शैक्षिक एवं सामाजिक मानदण्डों के अनुसार मूल्यांकित करता है। उसे यह सुनिश्चित करना पड़ता है कि क्या उसकी व्यक्तिगत परिस्थिति, योग्यता, कुशलता, रुचि एवं स्वभाव को दृष्टिकोण रखकर इस समस्या का अध्ययन समीचीन होगा? उदाहरणार्थ । यदि प्रस्तावित शोध के तहत सांख्यिकी या अन्य प्रविधियों का अनुप्रयोग अधिकांश रूप में अपेक्षित है, किन्तु शोधकर्त्ता को इन प्रविधियों में न तो व्यक्तिगत रुचि है और न ही उनके कुशल प्रयोग हेतु वांछित स्तर की कुशलता या प्रवणता है तो ऐसी दशा में यह कहा जा सकता है कि उक्त समस्या का चयन शोधकर्त्ता की वैयक्तिक परिस्थितियों एवं अपेक्षाओं के अनुकूल न होने के कारण उपयुक्त नहीं होगा। इसी प्रकार यदि शोध को पूरा करने में पर्याप्त क्षेत्र-कार्य एवं धन की जरूरत पड़ सकती है तथा शोधकर्त्ता यह जानता है कि उसकी परिस्थिति दोनों ही दृष्टियों से विषम है, तो ऐसी दशा में भी शोध की समस्या उपयुक्तता के व्यक्तिगत मानदण्ड के अनुकूल नहीं कही जा सकती।

शैक्षिक-उपयुक्ता से सम्बद्ध मानदण्ड का अर्थ है प्रस्तावित शोध-समसया द्वारा सम्बन्धित विषय में अनुभूत कठिनाई या जटिलता का सामना करने हेतु अपेक्षित ज्ञान, या सूझ-बूझ विकसित करने की सामर्थ्य का पता लगाना। दूसरे शब्दों में इस मानदण्ड के तहत हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि क्या समस्या का अध्ययन किए जाने पर ज्ञान के क्षेत्र में कोई अभिवृद्धि या परिस्थिति विशेष में सुधार हो सकेगा? सामाजिक-उपयुक्तता से सम्बन्धित मानदण्ड के अन्तर्गत यह पता लगाया जाता है कि प्रस्तावित शोध जनहित या समाज के लिए कितना उपयोगी या उपादेय सिद्ध होगा? यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रत्येक शैक्षिक शोध का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों के सम्यक् अवबोध, वर्णन एवं व्याख्या करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो कम से कम भारत जैसे विकासशील देशों के सन्दर्भ में शोध की उपयुक्तता पर प्रश्न चिन्ह लगाया जा सकता है। यदि आप किन्हीं परिस्थितियों में चूहों एवं बन्दरों के सामाजिक व्यवहार या अपचारी अथवा अपसमंजित बालकों के मित्रों या सहपाठियों के गंजापन का अध्ययन करना चाहें तो सम्भवत: इस प्रकार का अनुसन्धान जनहित या समाज के लिए कैसे उपयोगी होगा- आप शायद ही इसके पक्ष में कुछ कह पायें।

इस बात पर विशेष बल दिया जा चुका है कि अनुसन्धान की समस्या मूलत: एक ऐसा प्रश्न या मुद्दा है जो किसी गोचर याप परिस्थिति को समझने में अनुसन्धित्सु के लिए चुनौती या रहस्यपूर्णता की स्थिति का परिसूचक है। यही कारण है कि इसके निर्धारण या निरूपण में तार्किक कठोरता, अवधारणा विषयक खोज-बीन एवं विश्लेषण अपेक्षित है। पहले यह संकेतित किया गया है कि शोध-समस्या के निरूपण में तीन विशिष्ट संक्रियायें अत्यन्त आवश्यक हैं- समस्या में निहित चरों की पहिचान, चरों को व्यक्त करने वाले सम्प्रत्ययों का परिभाषीकरण तथा चरों एवं सम्प्रत्ययों के सन्दर्भ में अनुसन्धान के क्षेत्र को अनुसीमित करना। लेखक की राय में शोध के समस्त चरणों में इसका क्रान्तिक महत्त्व है तथा शोध की समस्या का सम्यक् निरूपण आधी लड़ाई जीतने के समान है।

25. शोध समस्या के वर्णन में से इसे सम्मिलित नहीं किया जाता-
(a) अध्ययन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
(b) समस्या को परिभाषित करना
(c) आधारित सिद्धान्त
(d) सम्बन्धित साहित्य को करना

26. शोध समस्या के उल्लेख में निम्न में से किसे सम्मिलित नहीं किया जाता?
(a) शोध का पुनरावलोकन
(b) शोध का क्षेत्र
(c) टर्म को परिभाषित करना
(d) शोध के उद्देश्य